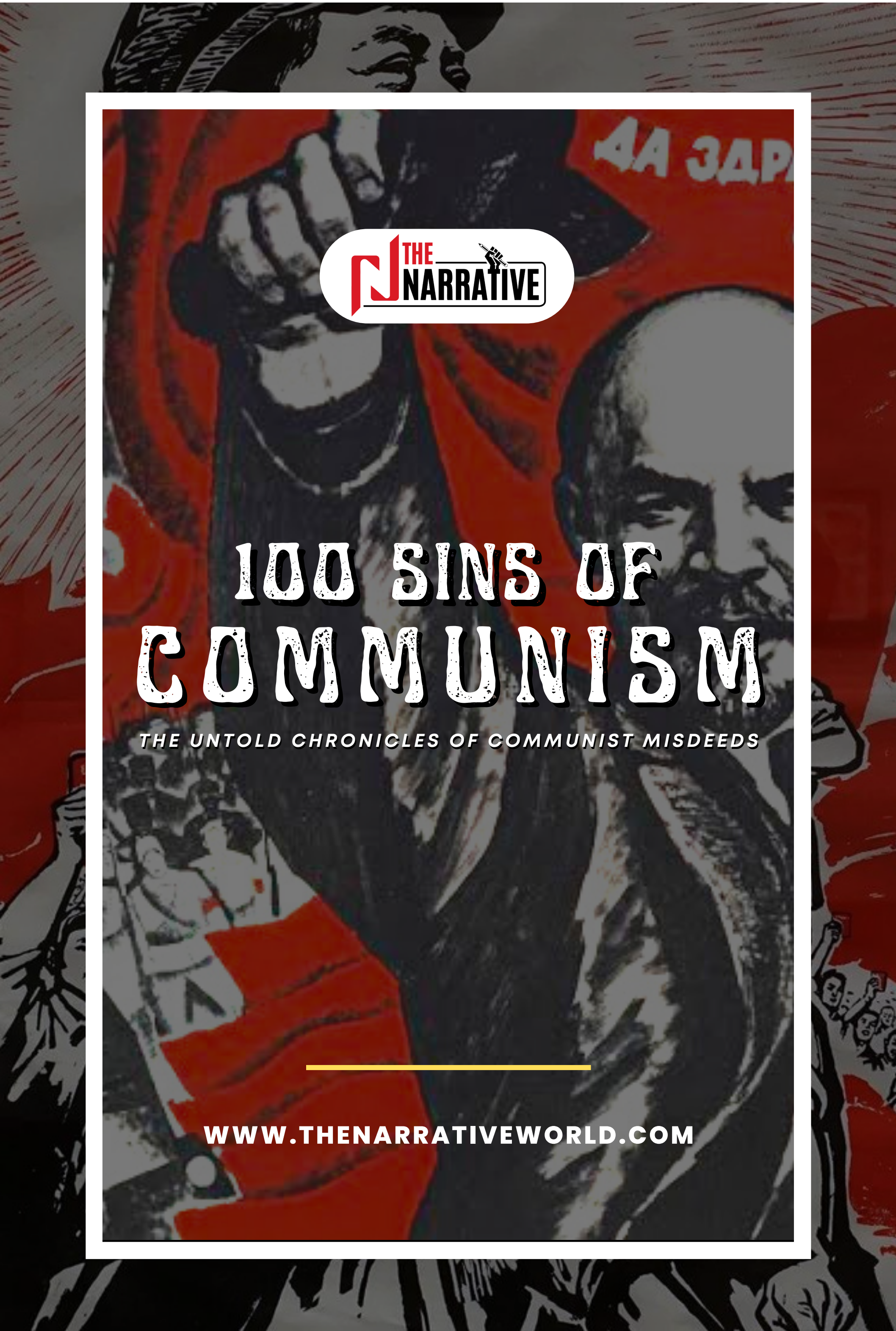

THE NARRATIVE

100 SINS OF COMMUNISM

THE UNTOLD CHRONICLES OF COMMUNIST MISDEEDS

WWW.THENARRATIVEWORLD.COM

सुधी पाठकगण

सादर नमस्कार,

Communism जिसे वामपंथ, लेफ्ट आदि कई नामों से जाना जाता है, एक ऐसी विचारधारा जिसने दुनिया के कई राष्ट्रों को तथाकथित समानता की क्रांति के नाम पर रक्तरंजित किया।

जिसने क्रूरता की पराकाष्ठा को लांघ कर वर्षों तक बर्बरता की।

जो स्वभाव बदलकर क्षद्म रूप में भारत समेत कई और लोकतांत्रिक राष्ट्रों को आज भी खोखला करने पर आमादा है।

प्रधानमंत्री मोदी क्यूं इन्हें टुकड़े - टुकड़े गैंग कहते हैं, क्यों इन्हें देश विरोधी या विभाजनकारी शक्तियों की श्रेणी में रखा जाता है ?

इनके कुकृत्यों की पड़ताल कर, विश्व भर में Communism द्वारा किए 100 बड़े नरसंहारों, अत्याचारों, घटनाओं को आपके समक्ष तथ्यात्मक रूप से लाने के लिए।

100 Sins of Communism
वामपंथ के 100 अपराध
की यह साप्ताहिक श्रृंखला हमने शुरू की है।

इसी क्रम में आज इस श्रृंखला के प्रथम 10 भागों को संकलित करती हुई विशेष पुस्तिका/ग्रंथिका आपके संग्रह हेतु प्रस्तुत है।

आशा है कि वामपंथी/कम्युनिस्ट रक्तरंजित विचार को उसके मूल स्वरूप में समझने के लिए यह उपयोगी रहेगी।

कृपया आप अपने विचार और सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं।
TEAM THE NARRATIVE

/tnworldofficial /+91 9713734000 /tnworldofficial

होलडोमर नरसंहार 1932-33

(जब अतिवादी कम्युनिस्ट नीतियों के कारण मारे गए लाखो लोग)

- विश्व के आधुनिक इतिहास की सबसे भयावह घटनाओं में से एक होलडोमर नरसंहार की स्मृति आज भी लोगों को झकझोर देती है

- इस भयावह नरसंहार को कम्युनिस्ट इतिहासकार प्राकृतिक त्रासदी से जोड़ते आए हैं जबकि इस मानव-निर्मित त्रासदी/नरसंहार के पीछे प्रत्यक्ष रूप से रूसी तानाशाह जोसफ स्टॅलिन की रूसी औधोगिकीकरण की सनक ही उत्तरदायी थी

- स्टॅलिन के नेतृत्व में वर्ष 1930 में रूस की कम्युनिस्ट तानाशाही सरकार ने कृषि से संबंधित अतिवादी कम्युनिस्ट नीतियों को कठोरता से लागू कर दिया जिसने 1932-33 में यूक्रेन के इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी को आकार दिया

- अनाज की पैदावार कम होने के उपरांत भी कम्युनिस्ट तानाशाही तंत्र ने मॉस्को एवं दूसरे देशों में इसका निर्यात निर्बाध रूप से जारी रखा परिणामस्वरूप यूक्रेन में लोग दाने-दाने को तरसने लगे

- कम्युनिस्टों की बर्बरता ऐसी कि इस भीषण अकाल के दौरान यूक्रेन की सीमा को सील कर दिया गया, आँकड़ो के अनुसार लगभग 2 वर्षो की इस कालखंड में कम से कम 33 लाख लोग काल के गर्त में समा गए

- कम्युनिस्टों की बर्बरता के शिकार हुए इन लोगों की स्मृति को यूक्रेन के पेकसर्क के राष्ट्रीय संग्रहालय में सहेजा गया है जहां लोग प्रतिवर्ष नवंबर के चौथे शनिवार को होलडोमर के पीड़ितों को श्रद्धांजलि देते हैं

बुर्कापाल माओवादी हमला

(जब कम्युनिस्ट आतंक की लाली से लाल हुई दंडकारण्य की माटी)

- छत्तीसगढ़ प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण प्रदेश है हालांकि अनूठी जनजातीय परंपराओं के लिए विश्व-विख्यात प्रदेश के दंडकारण्य क्षेत्र की माटी दशकों से कम्युनिस्ट रक्तरंजित हिंसा से लाल रही है

- इसी क्षेत्र में वर्ष 2017 के अप्रैल की 24 तारीख ऐसी ही एक रक्तरंजित हिंसक मुठभेड़ की गवाह तब बनी जब सुकमा जिले के बुर्कापाल से निकले जवानों के दस्ते पर घात लगाए बैठे 300 कम्युनिस्ट आतंकियों ने हमला कर दिया

- कैम्प से लगभग 500 मीटर की दूरी पर हुए इस हमले से पहले माओवादियों ने मिलिशिया सदस्यों के माध्यम से जवानों की रेकी की थी जिसके उपरांत लगभग 100 की संख्या में सुरक्षा बलों के दो टीमों में विभाजित होते ही माओवादियों ने उनपर हमला बोल दिया

- इस हमले में माओवादियों की ओर से एके-47, आईडी बमों एवं कई अन्य अत्याधुनिक हथियारों का उपयोग किया गया था जिसके बलबूते माओवादी जवानों को घेरने एवं मुठभेड़ के दौरान जवानों के हथियार लूटने में भी सफल रहे

- हालांकि अचानक हुए हमले से संभलते हुए सुरक्षाबलों ने भी जबरदस्त जवाबी कार्यवाही की जिसमे लगभग 10-12 माओवादी मारे गए

- फ़िर भी संख्या में अधिक रहे कम्युनिस्ट आतंकियों द्वारा घात लगाकर किए गए इस हमले में मां भारती के 25 वीर सपूत बलिदान हो गए।

विधायक परिमल साहा हत्याकांड त्रिपुरा

(जब हत्या के आरोपी कैडरों को बचाती रही कम्युनिस्ट सरकार)

- जहां कहीं भी कम्युनिस्ट सत्ता में आए उनके द्वारा सत्ता की शक्ति का उपयोग विरोधियों की बर्बर हत्याएं एवं विपरीत विचारधारा को जड़ से मिटाने के लिए किया जाता रहा है।
- भारत के संदर्भ में पश्चिम बंगाल एवं केरल इसके प्रत्यक्ष उदाहरण माने जाते रहे हैं, हालांकि कम्युनिस्टों की राजनीतिक हिंसा के माध्यम से सत्ता में बने रहने की असल प्रयोगशाला एक ऐसा राज्य रहा है।
- जहां कम्युनिस्ट प्रेरित राजनीतिक हिंसा का ना केवल लंबा इतिहास रहा है अपितु यहां कम्युनिस्ट तंत्र के दबदबे से न्याय तो दूर हिंसा की ये घटनाएं कभी राष्ट्रीय स्तर पर चर्चाएं भी नहीं बटोर पाई।
- ऐसे ही एक घटनाक्रम में वर्ष 1983 में कम्युनिस्ट कैडरों द्वारा त्रिपुरा के चरिमाल विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित विधायक परिमल साहा एवं उनके सहयोगी जितेंद्र की दिनदहाड़े बर्बरता से हत्या कर दी गई थी।
- इस जघन्य हत्याकांड में कुल 25 कम्युनिस्ट कैडर शामिल थे, जिसकी जांच को राज्य की कम्युनिस्ट सरकार द्वारा वर्षो तक जानबूझ कर धीमी गति से आगे बढ़ाया गया।
- परिणामस्वरूप दिनदहाड़े हुई इस बर्बर हत्या के दोषियो की सजा का एलान होने में 33 वर्ष लग गए और जब सजा का एलान हुआ
- तो उनमें से 7 लोगो की प्राकृतिक रूप से मृत्यु हो चुकी थी जबकि एक आरोपी को इतने वर्षों में भी त्रिपुरा की कम्युनिस्ट सरकार पकड़ नहीं पाई।

झीरम घाटी हत्याकांड

(जब कम्युनिस्ट आतंकियों ने लांघी बर्बरता की सीमाएं)

- 25 मई वर्ष 2013 को छत्तीसगढ़ राज्य के झीरम घाटी में राज्य के कांग्रेस नेताओं के काफिले पर घात लगाए बैठे नक्सलियों (कम्युनिस्ट आतंकियों) ने हमला बोल दिया।
- हमले का षड्यंत्र सुनियोजित था जिसमे बस्तर टाइगर के नाम से प्रसिद्ध महेंद्र कर्मा माओवादियों का मुख्य निशाना थे।
- माओवादियों ने पहले तो सड़क पर पेड़ गिराकर नेताओं के काफिले को अवरुद्ध किया और फिर जैसे ही गाड़िया रुकी घात लगाए बैठे लगभग 200 नक्सलियों ने ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दी।
- अचानक हुए इस हमले में कई नेताओं की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि शुरुवाती गोलीबारी में जीवित बचे लोगों को माओवादीयों ने चाकुओं से गोद डाला।
- इस हमले में माओवादियों ने महेंद्र कर्मा को जिंदा पकड़ा था जिसके उपरांत उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई, कर्मा को 100 से अधिक गोलियां मारी गई थी जबकि 50 से अधिक स्थानों पर उन्हें चाकुओं से गोदा गया था।
- हालांकि इतनी निर्मम हत्या के बाद भी जब वामपंथी रक्तपिपसा नहीं मिटी तो बर्बता की सीमाएं लांघ माओवादियों ने महेंद्र कर्मा के शव के ऊपर चढ़कर नृत्य भी किया।
- इस जघन्य हत्याकांड में कांग्रेस के दिग्गज नेताओं समेत कुल 32 लोग मारे गए थे हालांकि आज 9 वर्षो के उपरांत भी झीरम को लहूलुहान करने वाले कम्युनिस्ट आतंकियों को पकड़ा नहीं जा सका है।

धर्मजन एवं यशोदा हत्याकांड, केरल (1982)

(जब वैचारिक द्वेष में कम्युनिस्टों ने की निर्मम हत्या)

- बात 80 के दशक के केरल के अलप्पुझा की है जहां दो बेटियों के पिता धर्मजन कम्युनिस्ट विचारधारा के समर्थक थे, हालांकि भारतीय सेना में अपनी सेवाएं दे चुके धर्मजन का कुछ ही वर्षों में कम्युनिस्ट विचार से मोहभंग हो गया।

- इस दौर में ही धर्मजन राष्ट्रवादी विचार से प्रभावित हुए और परिणामस्वरूप वे संघ के स्वयंसेवक बन गए उन्होंने संगठन से जुड़कर सक्रिय रूप से शाखा एवं दूसरे गतिविधियों में भाग लेना भी शुरू कर दिया।

- राजनीतिक हिंसा को न्यायोचित ठहराने वाले कम्युनिस्टों को धर्मजन का कम्युनिस्ट विचार से अलग होकर संघ का स्वयंसेवक बनना इतना चुभा की उन्होंने धर्मजन की हत्या का षड़यंत्र रचा।

- और 13 जून को कम्युनिस्ट कैडरों ने धर्मजन पर जानलेवा हमला कर दिया, धर्मजन पर यह हमला तब किया गया था जब वे अपनी पत्नी यशोदा और बेटी के साथ जा रहे थे।

- दिनदहाड़े हुए इस हमले में कम्युनिस्टों ने साइकल के चेन से पीट पीटकर धर्मजन और उनकी पत्नी यशोदा की निर्मम हत्या कर दी जबकि उनकी बड़ी बेटी गिरिजा ने भागकर बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई।

- कम्युनिस्ट उग्रवाद को उसके मूल स्वरूप में प्रतिबिंबित करते इस निर्मम हत्याकांड की स्मृति आज भी लोगों को झकझोर देती है।

विनित्सिया नरसंहार (1937)

(जब कम्युनिस्ट तानाशाह की सनक का गवाह बना विनित्सिया)

- विश्व मे जहां कहीं भी कम्युनिस्टों ने सत्ता कब्जाई वहां उन्होंने सैकड़ो नरसंहार किए इन्ही में से एक हृदयविदारक घटना तत्कालीन सोवियत संघ एवं वर्तमान के यूक्रेनी शहर विनित्सिया में वर्ष 1937 में हुए नरसंहार की भी है।

- सोवियत संघ (रूस) में उस दौर में क्रूर कम्युनिस्ट तानाशाह जोसफ स्टालिन का शासन हुआ करता था जिसकी देखरेख में ही सरकार की खुफिया पुलिस एजेंसी एनकेवीडी भी कार्य करती थी।

- इस भयावह नरसंहार में स्टालिन के कम्युनिस्ट पुलिसिया तंत्र ने उन स्थानीय लोगों को चुन चुनकर गोली मारी जिनपर उन्हें स्टालिन की क्रूर अधिनायकवादी व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाने का संदेह था

- हालांकि सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि विरोधी करार दिए जाने को लेकर स्टालिन द्वारा कोई तय मापदंड नहीं रखा गया था यानी खुफिया एजेंसियों को यह स्वतंत्रता थी कि वे जिसे चाहे उसे बिना प्रमाण के भी गोली मार सकते थे।

- यह नरसंहार वर्ष 1936 से 1938 तक स्टालिन द्वारा महान शुद्धिकरण (THE GREAT PURGE) अभियान के दौरान हुए नरसंहारों में से एक था जिसमे लगभग 12000 लोगों को मार कर उनके दस्तावेजों के साथ सामूहिक रूप से दफन कर दिया गया था।

- वर्षो बाद इस नरसंहार की जांच में यह पाया गया कि ना केवल इस नरसंहार में मारे सभी लोगों के हाथ बांध कर उन्हें क्रमवार गोलियां मारी गई थी अपितु कम आयु की युवतियों को गोली मारने से पूर्व उनके साथ दुराचार भी किया गया था।

मरिंक्कुपुझा नरसंहार (केरल, 1988)

- 17 अगस्त वर्ष 1988 को केरल के तिरुअनंतपुरम के मरिक्कनझुवां में कम्युनिस्ट कैडरों ने मरिंक्कुपुझा मंदिर पर हमला कर दिया, अचानक हुए इस हमले में संघ के कार्यकर्ता ललिकुट्टन गंभीर रूप से घायल हो गए।

- अपना बर्बर चरित्र दिखाते हुए कम्युनिस्ट कैडरों ने असहाय अवस्था में ललिकुट्टन को मंदिर से बाहर खींचा एवं उन्हें जंगलो में ले गए।

- इसी दौरान कम्युनिस्ट कैडरों के दूसरे समूह ने दो और कार्यकर्ताओं वेणु एवं राजेश को भी अपहृत कर लिया, तीनो कार्यकर्ताओं को जंगल में निर्ममता से मारा गया।

- कम्युनिस्ट रक्तपिपासु विचार जनित हिंसा की भेंट चढ़े इन तीनो ही कार्यकर्ताओं का शव अगले दिन अज्ञात स्थान पर क्षत विक्षत हालात में बरामद किया गया।

- यह नरसंहार इतना सुनियोजित था कि घटना के दो दिन पूर्व सार्वजनिक मंच से कम्युनिस्ट नेताओं ने संघ के कार्यकर्ताओं को मलयालम माह चिंगम के पहले दिन यानी ओणम के पर्व पर सबक सिखाने की धमकी दी थी।

- आज भी केरल के मरिंक्कुपुझा समेत आस पास के क्षेत्र के लोगों को इस बर्बर कम्युनिस्ट हिंसा की स्मृति झकझोर कर रख देती है।

मौनवार, हत्याकांड (गया, बिहार 2021)

- कम्युनिस्ट तानाशाह चाहे सत्ता में हो या फिर सत्ता पाने के क्रम में उन्हें नेता माने बैठे उनके कैडर जंगलो में, हिंसा एवं बर्बरता उनका मूल स्वभाव रहा है

- वर्ष 2021 में 13 नवंबर को बिहार के गया जिले में इसी बर्बर स्वभाव की एक बानगी उस वक़्त देखने को मिली जब डुमरिया थाना क्षेत्र के मौनवार गांव में सूर्या भोक्ता के घर भाकपा माओवादियों ने हमला बोल दिया

- माओवादी सूर्या को पुलिस का मुखबिर मानते थे और इसी क्रम में उसकी हत्या करना चाहते थे हालांकि हमले के समय जब सूर्या अपने घर पर नहीं मिला तो 25 की संख्या में आए माओवादियों ने

- अपनी रक्तरंजित विचारधारा का निर्मम स्वरूप दिखाते हुए सूर्या के दोनों बेटों एवं उनकी बहुओं की बर्बरता से हत्या कर दी

- इस हृदयविदारक घटना को अंजाम देने के उपरांत कम्युनिस्ट आतंकियों ने चारों के शवों को बांस के खंभों पर रस्सी से लटका दिया और क्षेत्र में अपनी दहशत कायम करने की दृष्टि से घटनास्थल पर पर्चे भी छोड़े

- यह घटना इतनी वीभत्स थी कि ग्रामीणों में इस हत्याकांड की दहशत अब भी देखी जाती है जिसमें विदेशी तानाशाह को अपना नेता माने बैठे आतंकियों ने 4 निर्दोषों के रक्त से अपनी कथित क्रांति की प्यास बुझाई थी।

100 SINS OF

COMMUNISM

THE UNTOLD CHRONICLES OF COMMUNIST MISDEEDS

29

काजीबरम हत्याकांड (केरल, 1982)

(जब कम्युनिस्ट घृणा की आग में झुलसे राजन और सुब्रमणियन)

- भारत के दक्षिणवर्ती राज्य केरल में कम्युनिस्ट कैडरों द्वारा की गई राजनीतिक हत्याओं का लंबा इतिहास रहा है,

- ये हत्याएं मूल रूप से केरल में किसी भी दूसरी विचारधारा को मजबूती से पनपने से रोकने के लिए दहशत फैलाने के उद्देश्य से की जाती रही हैं ताकि राज्य में कम्युनिस्ट अपना वर्चस्व स्थापित रख सकें

- राजनीतिक शत्रुता से प्रेरित ऐसी ही एक हृदयविदारक घटना को कम्युनिस्टों ने वर्ष 1982 में केरल के त्रिसूर के काजीबरम में अंजाम दिया था जब 21 जुलाई को मार्क्सवादी चरमपंथियों ने सुनियोजित षड्यंत्र के तहत क्षेत्र के कई घरों में आगजनी कर दी थी

- इस आगजनी के पीछे स्थानीय निवासियों के बीच आरएसएस की बढ़ती लोकप्रियता का कम्युनिस्टों की आंखों में खटकना था, जिसको लेकर उन्होंने क्षेत्र में आरएसएस के दो लोकप्रिय कार्यकर्ताओं के. राजन एवं सुब्रमणियन को निशाना बनाने की सोची

- पेशे से मछुआरे रहे दोनों ही कार्यकर्ता संघ के समर्पित कार्यकर्ता थे जिनके घरों पर 21-22 जुलाई की मध्य रात्रि को वामपंथी गुंडों ने हमला बोल दिया

- यह हमला इतना सुनियोजित था कि कम्युनिस्ट कैडरों ने राजन एवं सुब्रमणियन को उनके घरों से बाहर निकलने का अवसर भी नहीं दिया और दोनों के घरों के ऊपर पेट्रोल छिड़क कर आग लगा दी

- इस आगजनी में दोनों ही कार्यकर्ता झुलस कर मारे गए और क्षेत्र में हिंसा के बूते दहशत फैला कर वर्चस्व स्थापित रखने की कम्युनिस्टों की योजना सफल रही

- विडंबना यह है कि आज इतने वर्षों बाद केरल के कम्युनिस्ट शासन में राजनीतिक हत्याओं का दौर अब भी जारी है

100 SINS OF

COMMUNISM

THE UNTOLD CHRONICLES OF COMMUNIST MISDEEDS

30

चिलखारी नरसंहार (2007)

(जब आधी रात कम्युनिस्टों ने निर्दोषों पर बरसाई गोलियां)

- विश्व भर में कम्युनिस्टों का दुष्प्रचार तंत्र इस रक्तपिपासु विचार को समानता, उदारता, एवं वंचित वर्ग के लोगों के संघर्ष से जोड़ कर दिखाता आया है हालांकि वास्तविकता ठीक इसके विपरीत रही है

- इसी क्रम में 26 अक्टूबर वर्ष 2007 में बिहार के चकाई प्रखंड के चिलखारी में हुआ नरसंहार कम्युनिस्ट उग्रवाद के इसी स्याह चेहरे को उजागर करता है

- बिहार-झारखंड सीमा पर स्थित चिलखारी में 26 अक्टूबर को कम्युनिस्ट आतंकियों (माओवादियों) ने मध्यरात्रि को फुटबॉल मैदान में चल रहे सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान अचानक हमला बोला

- हमले के समय स्थानीय लोग जतरा कार्यक्रम देख रहे थे जहां नक्सलियों के हमले से भगदड़ मच गई, हालांकि इससे पहले की स्थानीय लोग कुछ समझ पाते रक्तपिपासु माओवादियों ने पहली पंक्ति में बैठे लोगों पर अंधाधुंध गोलियां बरसा दीं

- माओवादियों की गोलीबारी में कुल 18 लोगों की घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई जबकि एक महिला समेत 2 लोगों ने अस्पताल ले जाने के क्रम में दम तोड़ दिया

- हमला दहशत फैलाने एवं कार्यक्रम में उपस्थित प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री के पुत्र अनूप की हत्या के लिए किया गया था जिसमें अनूप समेत कुल 20 लोग मारे गए

- वर्षों के उपरांत भी चिलखारी नरसंहार में मारे गए निर्दोषों के परिजन अभी भी न्याय की बाट जोह रहे हैं जबकि आज भी इस नरसंहार की स्मृति स्थानीय लोगों को झकझोर देती है

के टी जयकृष्णन हत्याकांड (कन्नुर, 1999)
(जब मासूम बच्चों के सामने कम्युनिस्टों ने लांघी बर्बरता की सीमाएं)

- भारत में जिन राज्यों में भी कम्युनिस्टों ने सत्ता संभाली है वहां राजनीतिक हिंसा और रक्तपात का लंबा इतिहास रहा है, हालांकि इस संदर्भ में जघन्य राजनीतिक हत्याओं में केरल का कोई सानी नहीं
- इस क्रम में केरल के कन्नुर में स्कूल टीचर के टी जयकृष्णन की हत्या केरल के रक्तरंजित कम्युनिस्ट इतिहास में सबसे गहरे काले धब्बों में से एक है
- कन्नुर जिले के कुथूपुरम्बू में स्कूल टीचर रहे जयकृष्ण केरल राज्य के भारतीय जनता युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष थे, जिनकी बढ़ती लोकप्रियता कम्युनिस्टों को रास नहीं आ रही थी और उन्होंने जयकृष्णन की हत्या की योजना तैयार की
- जयकृष्णन पर कम्युनिस्ट गुंडों के हमले का खतरा इतना अधिक था कि राज्य सरकार ने उनकी सुरक्षा के लिए अंगरक्षक भी तैनात किए थे, हालांकि वो केवल उनके विरुद्ध के षड्यंत्र का हिस्सा मात्र प्रमाणित हुए
- 1 दिसंबर वर्ष 1999 के उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन, के टी जयकृष्णन जब विद्यालय में कक्षा छठवीं के बच्चों को पढ़ा रहे थे, तभी दिनदहाड़े विद्यालय परिसर में घुसकर कम्युनिस्ट गुंडों ने उनपर हमला बोल दिया
- यह हमला इतना सुनियोजित था कि हमले से पूर्व जयकृष्णन की सुरक्षा में तैनात अंगरक्षक हमले से पूर्व ही गायब हो गए और कम्युनिस्ट नारे लगाते मार्क्सिस्ट गुंडे निहत्थे जयकृष्णन पर छुरी और तलवारों के साथ टूट पड़े, जयकृष्णन को मृत्यु हो जाने तक छुरियों से गोदा गया
- मानवीय मूल्यों को शर्मसार करने वाले इस जघन्य हत्या को कम्युनिस्टों ने छोटे बच्चों के सामने ही अंजाम दिया, जिनमें से कितने ही बच्चों को इस हत्या के कारण हुए अवसाद से बाहर निकालने के लिए वर्षों काउंसिलिंग एवं उपचार का सहारा लेना पड़ा।

कोरियन युद्ध (1950-53)

(जब साम्राज्यवादी कम्युनिस्ट नीति ने ली लाखो जानें)

- विश्व भर में कम्युनिस्ट तानाशाहों ने सैकड़ो नरसंहार किये जिनमे से ज्यादातर आंतरिक विद्रोहों (कथित क्रांति) के दौरान या उसके बाद सत्ता में काबिज होकर विरोधी विचारधारा रखने वाले लोगों की ओर लक्षित थी

- हालांकि इनमें से एक 1950 का कोरियाई नरसंहार ऐसा भी था जब कम्युनिस्ट तानाशाह (स्टालिन) की दुनिया को कम्युनिस्ट विचार से रंगने की लालसा ने लाखों लोगों की जान ले ली

- स्टालिन के निर्देश पर उत्तर कोरिया के कम्युनिस्ट तानाशाह किम इल सुंग ने जून 1950 में लोकतांत्रिक मूल्यों के समर्थक दक्षिण कोरिया पर जोरदार हमला बोला, लगभग 3 वर्षो तक चले इस भीषण युद्ध मे दोनों ओर से लाखों नागरिक एवं सैनिक मारे गए

- अनुमानित है कि कम्युनिस्ट तानाशाही एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के बीच के इस प्रत्यक्ष संघर्ष में लगभग 3 लाख से अधिक सैनिक मारे गए जिनमे से लगभग 2 लाख नार्थ कोरियाई थे

- विचारों के प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में लड़े जाने वाले इस युद्ध के परिणामस्वरूप जहां एक ओर लोकतांत्रिक दक्षिण कोरिया का उदय हुआ तो दूसरी ओर नींव पड़ी एक ऐसी तानाशाही व्यव्यस्था की जो आने वाले वर्षो में स्वयं को विश्व के सबसे गुप्त तानाशाही राज्य के रूप में स्थापित करने वाली थी

विजित एवं शिनोज हत्याकांड कन्नुर (2010, केरल)

- आपको भारत में कम्युनिस्टों की वास्तविक राजनीतिक शैली समझनी हो तो आप इसे केरल के कन्नुर से समझे आपको यहां पार्टी के हाथ खून से रंगे दिखाई देंगे

- इनमें से ही एक हृदयविदारक घटना वर्ष 2010 के मई माह की है जब रक्तपात एवं हिंसा को सामान्य राजनीतिक शैली मानने वाले कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं ने बीच सड़क दो निर्दोष युवकों की जान ले ली

- मृतकों का दोष केवल इतना था कि एक लोकतांत्रिक राष्ट्र में रहते हुए वे मार्क्स एवं माओ से अधिक किसी और राजनीतिक विचारधारा में विश्वास रखते थे और उन्हें इसकी कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी

- कन्नुर के माही वार्ड समिति के भाजपा अध्यक्ष विजित एवं इसके सचिव शिनोज पर कम्युनिस्टों ने 26 मई 2010 को तब हमला बोला जब दोनों मोटरसाइकिल से क्षेत्र में ही घूम रहे थे

- उनपर पहले बम से हमला किया गया, जिसके उपरांत संतुष्टि के लिए कम्युनिस्ट कैडरों ने उन पर धारदार हथियारों से उनकी मृत्यु होने तक कई वार किए

- उनकी हत्या इतनी बर्बरता से की गई थी कि इस निर्ममता के प्रत्यक्षदर्शी रहे एक युवक सुजीत, जिसका किसी राजनीतिक दल से कोई संबंध नहीं था कि दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई

- कम्युनिस्टों का संदेश स्पष्ट था किसी और विचारधारा के लिए कन्नुर में कोई स्थान नहीं हो सकता

बालीमेला जलाशय हमला (2008)

(जब जवानों के रक्त से लाल हुआ बालीमेला जलाशय)

- भारत मे कम्युनिस्ट आतंकियों के अग्रणी संगठन भाकपा (माओवादी) ने अपने चरम काल (वर्ष 2006 - 10) में सुरक्षाबलों पर कई घातक हमलों को अंजाम दिया है
- इनमें से रोंगटे खड़े करने वाला एक हमला वर्ष 2008 में ओड़िशा के बालीमेला जलाशय में कॉम्बिंग अभियान से लौट रहे ग्रेहाउंड के जवानों पर हुआ
- 29 जून को घने जंगलों से घिरे ओड़िशा के स्वाभिमान अंचल क्षेत्र से लौट रहे जवानों की नाव पर माओवादियों ने बालीमेला जलाशय के संकरे मार्ग पर हमला बोला
- हमला इतना सुनियोजित था कि जलाशय के बीचों बीच फंसी जवानों की नाव को डुबाने के लिए माओवादी रॉकेट लॉन्चरों एवं स्वचालित हथियारों से सटीक निशाना साध पा रहे थे
- ताबड़तोड़ गोलीबारी से जवानों की नाव डूब गई और नाव पर सवार कुल 65 लोगों में से केवल 27 लोग बड़ी मुश्किल से तैर कर अपनी जान बचा पाए
- नक्सलियों की बर्बरता ऐसी कि इस हमले में बलिदान हुए कुल 38 जवानों में से कईयों को माओवादियों ने तैरने के क्रम में गोलियों से छलनी किया तो कुछेक जवानों को बंधक बनाकर निर्ममता से उनकी हत्या कर दी गई

पल्लक्कड़ आगजनी - हत्याकांड, 2016
(जब कम्युनिस्ट राजनीतिक घृणा की आग से झुलस गया परिवार)

- केरल में राजनीतिक हिंसा का लंबा इतिहास रहा है जिसकी शुरुआत कम्युनिस्ट विचारों के राज्य में अपनी जड़ें मजबूत करने के साथ ही हो चली थी
- दुर्भाग्य से कम्युनिस्ट जनित राजनीतिक हिंसा का यह दौर राज्य में अब भी जारी है और इसका एक उदाहरण देखने को मिला वर्ष 2016 विधानसभा चुनावों में पल्लक्कड़ के कांजीकोड में
- इन चुनावों में भाजपा के अच्छे प्रदर्शन से घबराये कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं ने स्थानीय मंडलम समिति के सदस्य राधाकृष्णन एवं भाजपा महिला मोर्चा की सदस्या उनकी भाभी विमला को निशाना बनाया
- 28 दिसंबर 2016 को कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के समूह ने सुबह के 4 बजे राधाकृष्णन के घर पर हमला बोल आंगन में लगी गाड़ियों में आगजनी कर दी
- आग इतनी भयावह थी कि देखते देखते इसने पूरे घर को अपनी चपेट में ले लिया, इस हमले में राधाकृष्णन के बड़े भाई एवं भतीजे को गंभीर चोटें आई
- जबकि 9 दिनों तक अस्पताल में संघर्ष करने के उपरांत लगभग 70 प्रतिशत तक जल चुके राधाकृष्णन ने 6 जनवरी को अंतिम सांस ली
- इस हमले में विमला बुरी तरह झुलस गई थी जो अस्पताल में 20 दिनों तक मौत से लड़ती रही, हालांकि आखिरकार 17 जनवरी को विमला भी जिंदगी की लड़ाई हार गईं
- ये कुकृत्य मानवीय संवेदनाओं को झकझोरने वाला था जिसकी स्मृति मात्र पल्लक्कड़ के लोगों को अब भी झकझोर देती है